मंगलवार

33 साल से देहरादून का विश्वास

28 अक्टूबर 2025

- देहरादून
- वर्ष 33
- अंक 263
- पृष्ठ 8
- मूल्य ₹ 1.00

दून वैली मेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94

email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com

डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

पेपर लीक मामला:

सीबीआई ने किया मुकदमा दर्ज

हमारे संवाददाता

देहरादून। बहुचर्चित पेपर लीक मामले में आखिरकार सीबीआई ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गयी है। मामले में चार आरोपी बनाये गये है जो पूर्व में ही गिरफ्तार हो चुके है।

विदित हो कि बीते 21 सितम्बर को उत्तराखंड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग की स्नातक स्तरीय भर्ती परीक्षा हुई थी। इस दौरान इस परीक्षा का पेपर लीक होने की खबरों से राज्य के बेरोजगार युवाओं का पारा गरम हो गया और वह राजधानी दून से लेकर राज्य के अलग-अलग हिस्सों में धरना-प्रदर्शन करने लगे। हालांकि शुरूआत में राज्य सरकार द्वारा इसे पेपर लीक न मानते हुए एक सामान्य छोटी घटना माना गया और पुलिस जांच मे चार आरोपियों खालिद, सुमन, साबिया व हिना को गिरफ्तार कर लिया गया। लेकिन छात्र व बेरोजगार संघ इस मामले की सीबीआई जांच कराने की मांग पर अड़ गये और परीक्षा की शुचिता पर सवाल उठाते हुए परेड ग्राउंड के पास धरना शुरू कर दिया था।

कई दौर की लंबी बातचीत के बाद भी समाधान नहीं निकला। जबकि सरकार ने इस दौरान एक एसआईटी गठित कर दी गयी, जिसने तत्काल जांच शुरू कर दी गयी। बावजूद इसके युवा लगातार सीबीआई जांच कराने और परीक्षा रद्द करने की मांग पर अड़े रहे। जिसके बाद 29 सितंबर को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी देहरादून स्थित धरनास्थल पर युवाओं से मिले और वहां से सीबीआई जांच की संस्तुति की। इसके अगले दिन शासन ने आधिकारिक पत्र जारी कर इसे औपचारिक रूप दिया। पुलिस मुख्यालय लगातार केंद्रीय विभागों के साथ समन्वय बनाए हुए था। इसके बाद मुख्यमंत्री ने परीक्षा रद्द करने की घोषणा की और अब सीबीआई जांच के लिए डीओपीटी ने भी मंजूरी दी है। जिसके बाद मामले में सीबीआई ने देर रात मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मामला देहरादून एसीबी शाखा में नकल विरोधी कानून के तहत दर्ज किया गया है और इसे असिस्टेंट सुप्रिटेंडेंट राजीव चंदोला को सौंपा गया है।

दून वैली मेल

संपादकीय

सड़कों पर जनता

उत्तराखंड की जनता इन दिनों कुछ मुद्दों को लेकर सरकार से नाराज है। पहला मुद्दा है राज्य की बदहाल स्वास्थ्य सेवाएं जिन्हें लेकर चौखुटिया से शुरू हुआ जन आंदोलन पूरे राज्य में पैर पसार चुका है, लोग राजधानी दून की ओर कूच कर रहे हैं जहां वह सीएम और स्वास्थ्य मंत्री धन सिंह के आवास घेराव की बात कर रहे हैं। वहीं दूसरा मुद्दा है शराब की दुकानों का और इन शराब के ठेको के आसपास बढ़ते आपराधिक मामलों का जिन्हे लेकर लोग सड़कों पर उतरे हुए हैं। अभी ऋषिकेश के मुनि की रेती में अजय कंडारी नाम के युवक की खाराश्रोत शराब के ठेके के पास चाकू से गोदकर हत्या कर दी गई। भले ही पुलिस ने हत्या को अंजाम देने की आरोपी युवक की गिरफ्तारी कर ली गई हो लेकिन यह कोई पहली मर्तबा नहीं है जब इस खाराश्रोत ठेके को लेकर सवाल उठे हैं। इससे पूर्व भी यहां कई आपराधिक वारदातें सामने आ चुकी है जिसके कारण लोग ठेके को हटाने की मांग कर रहे हैं। इस बार भी प्रशासन ने पूर्व की तरह ठेका हटाने का भरोसा जनता को दिया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि राज्य में शराब से होने वाली भारी भरकम कमाई के लालच में राज्य में शराब के ठेको की भरमार कर डाली है तथा इन्हें हटाने के लिए क्षेत्रवासी खास तौर से राज्य की महिलाएं आए दिन इनका विरोध करने के लिए सड़कों पर दिखाई देती हैं। उधर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी अब तक न जाने कितनी बार राज्य को नशा मुक्त बनाने की बात कह चुके हैं, लेकिन पहाड़ में शराब और नशे की गंगा जिस तरह अविरल गति से जारी है उसका सच किसी से भी छिपा नहीं है। दून की शांत वादियों में रेव पार्टियों के आयोजन का काफी लंबा इतिहास है। अभी बीते दिनों राजपुर रोड पर भी पुलिस ने एक रेव पार्टी पर छापा मारा था। नशा और नशा तस्करों का नेटवर्क राज्य में कितना मजबूत है तथा कैसे इस धंधे पर नामचीन लोगों का संरक्षण प्राप्त है यह सभी जानते हैं। अब बात चौखुटिया से शुरू हुए स्वास्थ्य अभियान की करें तो 2 अक्टूबर की घटना से शुरू हुआ यह आंदोलन अभी तक जारी है। अब क्षेत्रीय लोग स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के इस मुद्दे पर पदयात्रा करते हुए देहरादून की ओर बढ़ रहे हैं। चौखटिया की तरह ही टिहरी में भी अब एक महिला की बच्चें को जन्म देते समय मौत हो जाने के बाद आंदोलन शुरू हो गया है। राज्य के कोने-कोने से इन स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के लिए चलाये जा रहे आंदोलन को व्यापक समर्थन मिल रहा है। इस समर्थन के पीछे अहम कारण यह है कि राज्य के हर जिलों में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति कमोवेश एक जैसी ही है। डांडी-कांडी के सहारे भी लोग मरीज को ढोते हैं और अस्पतालों में स्वास्थ्य सेवाएं न होने के कारण दम तोड़ते लोग आखिर चुप भी रहे तो आखिर कब तक। अस्पतालों में डॉक्टर नहीं है और कहीं मूलभूत सुविधाएं नहीं है। भले ही स्वास्थ्य मंत्री का दावा यह हो कि राज्य में स्वास्थ्य सेवाओं में भारी सुधार हुआ है लेकिन इन सुविधाओं का सच किसी से भी छिपा नहीं है। वैसे यह सिर्फ दो ही मुद्दे ऐसे नहीं है जिन्हें लेकर प्रदेश की जनता सड़कों पर है। राज्य की खराब सड़कों तथा आपदा राहत जैसे अन्य अनेक मुद्दों को लेकर राज्य के लोगों की सरकार से भारी नाराजगी है और वह सरकार को पानी पी पीकर कोस रहे हैं। सत्ता पर इन जनता के आंदोलनों का कितना प्रभाव पड़ता है यह आने वाला समय ही बताएगा।

गौरा देवी की जन्मशती पर स्मरण

●देवेन्द्र कुमार बुडाकोटी

मेरा मन 1987 की उन दिनों में लौट जाता है जब मैं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे.एन.यू.) से सामुदायिक स्वास्थ्य शोधकर्ता के रूप में चमोली जिले में स्वास्थ्य सेवाओं के अध्ययन के लिए क्षेत्रीय दौरे पर था। आज जब मैं यह समाचार देखता हूँ कि डाक विभाग ने चमोली जिले के जोशीमठ ब्लॉक के रेणी गाँव में गौरा देवी की जन्मशती के अवसर पर एक विशेष "माय स्टैम्प" और स्मारक लिफाफा जारी किया है, तो अनेक स्मृतियाँ मन में ताजा हो जाती हैं।

सन् 1987 में ही मेरी पहली मुलाकात गौरा देवी से हुई थी। यह भेंट चिपको आंदोलन के अग्रणी श्री चंडी प्रसाद भट्ट द्वारा गोपेश्वर में दशोली ग्राम स्वराज मंडल के परिसर में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान हुई। उस समय मेरा वहाँ रहना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी। समय का बीतना तब ही महसूस होता है जब पुराने मित्र बताते हैं कि हमारे बच्चे अब कितने बड़े हो गए हैं ख़ और आज जब मेरी बड़ी बेटी सृष्टि पर्यावरण अभियांत्रिकी में बी.टेक और एम.टेक कर चुकी है, तो वे दिन और भी गहराई से याद आते हैं।

मुझे याद है कि उसकी कक्षा 10 की पर्यावरण शिक्षा की पाठ्यपुस्तक में "चिपको आंदोलन" को पर्यावरण संरक्षण की एक सफल जनकथा के रूप में शामिल किया गया था। उस समय मैं नहीं जानता था कि उसे इस आंदोलन के बारे में और कितना बताऊँ, परंतु उस संदर्भ ने मुझे मेरी पहली रेणी गाँव यात्रा की याद दिला दी ख़ वह यात्रा जिसमें मेरे साथ स्वयं गौरा देवी थीं, वह महिला जिन्होंने गाँव की महिलाओं को संगठित कर वृक्षों को काटने से रोकने के लिए उन्हें आलिंगन कर जंगल बचाने का साहस दिखाया था।

उस समय मैं चमोली जिले में स्वास्थ्य सेवा तंत्र की स्थिति पर शोध कर रहा था। इस दौरान मैंने चिपको आंदोलन और उसमें महिलाओं की भूमिका के बारे में बहुत कुछ पढ़ा था। गोपेश्वर में रहते हुए मुझे श्री चंडी प्रसाद भट्ट से सामाजिक और स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर चर्चा करने का अवसर मिला। यही मेरा सौभाग्य था कि इन्हीं दिनों मुझे गौरा देवी से भी मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। वे गोपेश्वर किसी कार्यक्रम में भाग लेने आई थीं। उनके चेहरे की चमक, आँखों का आत्मविश्वास और व्यक्तित्व की गरिमा सभी को प्रभावित कर रही थी।

बातचीत के दौरान उन्होंने हँसते हुए कहा कि उनकी बहुत बार तस्वीरें खींची गईं, परंतु उन्हें कभी उनकी प्रतियाँ नहीं मिलीं। मैंने तुरंत स्थानीय फोटोग्राफर को बुलाया और यह सुनिश्चित किया कि उन्हें तस्वीरें मिल जाएँ। अगले दिन मैंने उनके गाँव जाने का निश्चय किया, और सुबह-सुबह हम दोनों रेणी के लिए बस में सवार हुए। जब मैंने दोनों का किराया दिया तो उन्होंने जिद की कि अपना किराया स्वयं देंगी। वे तभी मानीं जब मैंने मजाक में कहा कि यह आधिकारिक यात्रा का खर्च है।

बस की यात्रा के दौरान मैं अधिकतर सुनता रहा ख़ उनके अनुभवों और बातों में सादगी, संवेदना और जीवन की गहराई झलकती थी। रेणी गाँव के सड़क सिर तक पहुँचने के बाद हमें पैदल ऊपर चढ़ना पड़ा। उनकी उम्र मुझसे बहुत अधिक थी, फिर भी उनकी चाल मुझसे तेज थी ख़ वे बार-बार रुकतीं ताकि मैं साँस ले सकूँ।

उस दिन गाँव की महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता कुछ महिलाओं के साथ अनौपचारिक बैठक कर रही थीं। यह मेरे लिए एक अच्छा अवसर था उनसे बातचीत करने का। गौरा देवी भी उस समूह में शामिल हुईं और यह देखना अद्भुत था कि गाँव की महिलाएँ उन्हें कितना सम्मान और स्नेह देती थीं। उनकी नेतृत्व क्षमता और दृढ़ता हर क्षण झलक रही थी। मेरे लिए गौरा देवी सामूहिकता, साहस, नेतृत्व और भारतीय नारी-शक्ति की प्रतीक थीं। वे अब हमारे बीच नहीं हैं, परंतु उनके नेतृत्व की भावना आज भी देश के पर्यावरण और मानवाधिकार आंदोलनों को प्रेरणा देती है। उनकी जन्मशती के इस अवसर पर मैं इस महान व्यक्तित्व को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ ख़ गौरा देवी, जिनका जीवन और संघर्ष आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा और चेतना का स्रोत बना रहेगा।

(लेखक एक समाजशास्त्री हैं और चार दशकों से विकास क्षेत्र में सक्रिय हैं)

मुख्यमंत्री ने सुनी जन समस्याएं

संवाददाता

खटीमा। मुख्यमंत्री ने जनप्रतिनिधियों व जनता से मिल समस्याएं सुनी और मौके पर अधिकारियों को दिशा निर्देश दिये। आज यहां मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी अपने खटीमा भ्रमण के दूसरे दिन मंगलवार को अपने आवास नगला तराई व कैंप कार्यालय लोहियाहेड में जनप्रतिनिधियों व जनता ने मुलाकात कर जन समस्याएं सुनी। मुख्यमंत्री ने अपने आवास व कैम्प कार्यालय में जनता से मुलाकात की व उनकी समस्याएं सुनी तथा समस्याओं का समाधान करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। इस अवसर पर अध्यक्ष जिला पंचायत अजय मौर्य, अध्यक्ष नगर पालिका खटीमा रमेश चंद्र जोशी, दर्जा मंत्री, अनिल कपूर डब्बू, शंकर कोरंगा, फरजाना बेगम, जिलाधिकारी नितिन सिंह भदौरिया, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मणिकांत मिश्रा, वीसी जयकिशन, सीडीओ दिवेश शाशनी, अपर जिलाधिकारी कौस्तूभ मिश्रा, एसपी सिटी डॉ. उत्तम सिंह नेगी, उप जिलाधिकारी तुषार सैनी सहित अनेक अधिकारी व जनप्रतिनिधि,जनता उपस्थित थे।

मैसेज पर क्लीक करने पर गंवाये सवा दो लाख रुपये

संवाददाता

देहरादून। मैसेज पर क्लीक करने पर सवा दो लाख रूपये गंवाने के मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार श्रीनगर पौडी गढवाल निवासी निश्चय सिंह ने रायवाला थाने में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि वह किसी काम से यहां आया था। वह रायवाला चौक पर खडा था तभी उसके मोबाइल पर एक मैसेज आया उसने मैसेज को जैसे ही क्लीक किया उसके खाते से दो लाख 21 हजार रूपये निकल गये। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

घर के बाहर से स्कूटी चोरी

संवाददाता

देहरादून। चोरों ने घर के बाहर खडी स्कूटी चोरी कर ली। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार न्यू डिफेन्स एन्क्लेव डांडी नूरीवाला निवासी नागेन्द्र उनियाल ने रायपुर थाने में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसने अपनी स्कूटी घर के बाहर खडी की थी। लेकिन जब वह थोडी देर बाद वापस आया तो उसने देखा कि उसकी स्कूटी अपने स्थान से गायब थी।

कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने पूर्व सांसद बृजभूषण शरण सिंह का किया स्वागत

संवाददाता

देहरादून। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने पूर्व सांसद एवं भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह का स्वागत किया।

आज यहां उत्तराखण्ड के कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने अपने आवास पर पूर्व सांसद एवं भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह का हार्दिक स्वागत किया। इस अवसर पर मंत्री जोशी ने पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका अभिनंदन किया और उनके साथ विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक विषयों पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने सम्मान स्वरूप श्रीगणेश जी की मूर्ति भेंट की। मंत्री जोशी ने कहा कि बृजभूषण सिंह का अनुभव और जनसेवा के प्रति समर्पण हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने प्रदेश के विकास और जनकल्याण के मुद्दों पर निरंतर मार्गदर्शन देने के लिए उनका आभार व्यक्त किया। इस दौरान मंत्री जोशी की धर्मपत्नी निर्मला जोशी, भाजपा के प्रदेश मंत्री नेहा जोशी, मंडल अध्यक्ष राजीव गुरुंग, प्रदीप रावत, विष्णु गुप्ता, ज्योति कोटिया, निरंजन डोभाल, डॉ बबीता सहोत्रा, कमली भट्ट, सुरेन्द्र राणा, समीर डोभाल, सिकंदर सिंह सहित मंडल महामंत्रियों और पार्षदों ने भी पूर्व सांसद का स्वागत किया।

छठवीं शदी की निर्मित बावड़ी आज भी बुझा रही ही 300 आबादी वाले गांव की प्यास!

लोकेंद्र सिंह बिष्ट

उत्तरकाशी। उत्तरकाशी जिले का सबसे दूरस्थ क्षेत्र फते पर्वत की ऊंची पहाड़ी पर बसे भीतरी गांव के बारे में, जहां आज भी गांव के बीच मौजूद है बावड़ी। छठवीं शदी की निर्मित यह बावड़ी आज भी प्यास बुझा रही है 3 हजार आबादी वाले गांव की प्यास। बावड़ी से पीने के पानी के अलावा उन सभी कामों के लिए पानी का उपयोग किया जा रहा है जो इंसान के लिए जरूरी है।

वर्तन धोने से लेकर कपड़े धोने और नहाने से लेकर साफ सफाई और छोटी मोटी साग सब्जी के खेतों की सिंचाई के लिए इसी बावड़ी पर लोग निर्भर हैं।

बावड़ी है कि इसका पानी छठवीं शताब्दी से आज तक खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। दिनभर बावड़ी के पास लोगों का जमघट लगा रहता है। बावड़ी से पानी लेकर सभी कामों को अंजाम देने के साथ साथ मिलन का भी एक केंद्र बना है भीतरी गांव की बावड़ी।

पहले बात करते हैं कि बावड़ी है क्या? ज्यादातर लोग बावड़ी से परिचित होंगे, फिर भी बावड़ी के बारे में जानना जरूरी हो जाता है। बावड़ियां हमारी प्राचीन जल संरक्षण प्रणाली का आधार रही हैं। प्राचीन काल, पूर्वमध्यकाल एवं मध्यकाल सभी में बावडियों के बनाये जाने की जानकारी मिलती है।

बावड़ी का अर्थ होता है सीढ़ियों वाला एक बड़ा कुआँ, जो भारतीय उपमहाद्वीप, खासकर शुष्क क्षेत्रों में जल एकत्र करने का एक पारंपरिक तरीका है। यह एक तरह का भूमिगत भवन या कुंड है जिसमें जल स्तर तक उतरने के लिए लंबी सीढ़ियाँ बनी होती हैं।।

प्राकृतिक जलश्रोत के अभाव वाले क्षेत्रों में इनका उपयोग पीने का पानी, कपड़े धोने, नहाने और सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराने के लिए बावड़ियों का निर्माण किया जाता था।

बावड़ियाँ वास्तुकला का एक महत्वपूर्ण रूप भी हैं। भारत में कई प्रसिद्ध बावड़ियाँ हैं, जैसे कि राजस्थान की चांद बावड़ी। ऐसी कई बावड़ियाँ भारत के विभिन्न हिस्सों में स्थित हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं: राजस्थान के दौसा जिले में स्थित चाँद बावड़ी और बूंदी में रानीजी की बावड़ी।

गुजरात में अडालज बावड़ी भी प्रसिद्ध है, जबकि हरियाणा के फारुखनगर में गौस अली शाह की बावड़ी है। भारत की सबसे बड़ी बावड़ी चांद बावड़ी है, जो राजस्थान के आभानेरी गाँव में स्थित है। यह 13 मंजिल गहरी है और इसमें लगभग 3,500 सीढ़ियाँ हैं। यह अपनी उत्कृष्ट ज्यामिति और गहरी संरचना के लिए जानी जाती है। आधुनिक जल प्रणालियों के आगमन के साथ प्राचीन भंडारण कुएँ जल्दी ही भुला दिए गए।। और कई बावड़ियां और कुएं आज अनुपयोगी और जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं। विशेषज्ञों की रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में मौजूद 3,000 बावड़ियों में से केवल 400 से लेकर 500 बावड़ियां ही उपयोग योग्य स्थिति में हैं।।

अब सवाल उठ रहा है कि क्या भारत की प्राचीन बावड़ियाँ जल संकट का समाधान कर सकती हैं?

जलवायु परिवर्तन के मोर्चे पर अग्रणी तथा गंभीर जल संकट से जूझ रहे कई भारतीय शहर समाधान के लिए प्राचीन जल भंडारण तकनीकों की ओर रुख कर रहे हैं। जल संचयन के लिए जमीन में निर्मित भूमिगत संरचनाएं, बावड़ियां, कभी भारत के सूखाग्रस्त क्षेत्रों में ग्रामीण जीवन का केन्द्र बिन्दु हुआ करती थीं , जो घरेलू उपयोग और सिंचाई के लिए जल का एक स्थायी स्रोत उपलब्ध कराती थीं। आधुनिक जल प्रणालियों के आगमन के साथ प्राचीन भंडारण तालाब शीघ्र ही भुला दिए गए, तथा उनमें से कई अब भी अप्रयुक्त और जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं। लेकिन अब कई स्तरों पर इन बावड़ियों की वास्तुकला और इतिहास को संरक्षित करने की कोशिश की जा रही हैं जिससे भारत के बढ़ते जल संकट का समाधान हो सके।

आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर के सीईओ वास्तुकार रतीश नंदा ने कहा कि बावड़ियों के जीर्णोद्धार में ष्मूलभूत बातों पर वापस जाकर, ग्राम स्तर पर जल उपलब्धता की बहुत सी समस्याओं को हल करने की क्षमता है। यह संस्था दुनिया भर में विरासत स्थलों के संरक्षण के लिए काम करने वाली एक परोपकारी संस्था है।

देश के केन्द्रीय भूजल बोर्ड के अनुसार, भारत के लगभग 17% भूजल भण्डारों का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है, जिसका अर्थ है कि जल का दोहन उसकी पुनर्भरण क्षमता से अधिक दर पर किया जा रहा है। भारत में लगातार अनियमित होते मानसून के कारण घटते जल स्तर की समस्या और भी बदतर होती जा रही है।

परिणामस्वरूप, कई राज्य जो पहले से ही सूखे से ग्रस्त थे और भूजल पर अत्यधिक निर्भर थे, वे पानी की भारी कमी का सामना कर रहे हैं, जिससे जल संरक्षण का महत्व उजागर होता है। उत्तरी भारतीय राज्य राजस्थान में, जो विश्व के सर्वाधिक जल-संकटग्रस्त क्षेत्रों में से एक है वहां की राज्य सरकार ने विश्व बैंक के साथ मिलकर विरासत स्थलों के पुनरुद्धार के लिए एक रोडमैप तैयार किया है । जिसमें कई बावड़ियाँ भी शामिल हैं। इनके जीर्णोद्धार से न केवल सूखाग्रस्त क्षेत्रों के शहरों को आत्मनिर्भर बनने में मदद मिली है, बल्कि कई स्थलों ने पर्यटकों को भी आकर्षित किया है। जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा मिला है। इसका एक सबसे प्रमुख उदाहरण राजस्थान का जोधपुर शहर है। जो पर्यटन पर बहुत ज्यादा निर्भर है। 2017 में, पुराने शहर के बीचों-बीच स्थित तूरजी का झालरा नामक बावड़ी के जीर्णोद्धार का जिम्मा रास होटल श्रृंखला के मालिकों ने उठाया। जिनकी परिवर्तित हवेली उस बावड़ी के ऊपर स्थित है जो लंबे समय से वीरान पड़ी थी।

जीर्णोद्धार के दौरान हाथियों और गायों की नक्काशी और देवी-देवताओं के ग्रंथ मिले, इसकी नक्काशीदार सीढ़ियां और उल्टे पिरामिड का डिजाइन उस युग की मारवाड़ी स्थापत्य शैली का उदाहरण है।जो शहर के इतिहास के एक महत्वपूर्ण हिस्से को संरक्षित करता है।

विरासत शिक्षक और लेखक विक्रमजीत सिंह रूपराय, जिन्होंने बावड़ियों पर एक किताब लिखी है। विक्रमजीत रूपराय का कहना है कि कई बावड़ियाँ अपने इतिहास या उनसे जुड़ी किंवदंतियों के लिहाज से अनोखी होती हैं। जब तक कोई संरचना खड़ी रहती है, तब तक संभावना बनी रहती है कि हम सही कहानी तक पहुँच पाएँ।

तूरजी का झालरा अब जोधपुर के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है और इसने फैशन बुटीक, कैफे और अन्य व्यवसायों को आकर्षित किया है। जो इस क्षेत्र में पर्यटकों की आमद से पैसा कमाने की तलाश में हैं।

इधर जोधपुर की बावड़ियों को बचाने पर आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर के सीईओ वास्तुकार रतीश नंदा ने कहा कि पर्यटन और प्रमुख विरासत स्थलों का संरक्षण अक्सर साथ-साथ चलते हैं। उन्होंने बताया कि पर्यटकों से प्राप्त धन का उपयोग स्मारकों के रखरखाव में किया जा सकता है।

निजामुद्दीन दरगाह, जो विश्व के सबसे प्रसिद्ध सूफी संतों में से एक है, के बगल में स्थित बावड़ी, उस स्थल का एक उदाहरण है जिसका धार्मिक महत्व आज भी बना हुआ है - कई लोग मानते हैं कि यहां का पानी पवित्र है।

आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर के सीईओ वास्तुकार रतीश नंदा ने कहा कि बावड़ी के जीर्णोद्धार का काम शुरू किया ख यह एक कठिन व जटिल चुनौती भरा कार्य था जो दशक भर चलने वाली प्रक्रिया थी जिसमें 40 फीट गाद निकालना शामिल था। निजामुद्दीन बावड़ी उन 16 बावड़ियों में से एक है जिनका नई दिल्ली में जीर्णोद्धार किया गया है। जिसके लिए वर्ष 2021 में, निजामुद्दीन बस्ती संरक्षण परियोजना को उत्कृष्टता के लिए यूनेस्को पुरस्कार मिला। रूपराय ने कहा कि हालांकि, बावड़ियां स्थानीय समुदाय के लाभ के लिए जल निकायों को पुनर्जीवित करने के प्रयासों की शुरुआत मात्र हैं। यही बात सभी नदियों, झीलों और सभी जल संरचनाओं के लिए होनी चाहिए। शहरों के छोटे तालाबों से लेकर हमारे पूरे महासागर तक।

इधर समूचे देश में पेयजल संकट को देखते हुए विभिन्न स्तरों पर जल संरक्षण और जल की उपलब्धता के लिए विकसित की गई प्राचीन व्यवस्था जैसे बावड़ियों को पुनर्जीवित, पुनर्संरक्षित करने की कोशिशें तेजी के साथ चल रही हैं। वहीं दूसरी तरफ उत्तराखण्ड राज्य के उत्तरकाशी जिले के सुदूरवर्ती फते पर्वत के भीतरी गांव में स्थित सैकड़ों वर्ष प्राचीन बावड़ी आज भी 3000 आबादी वाले गांव की प्यास बुझा रही है। लेकिन सरकारी स्तर पर इस बावड़ी के रख रखाव पर कोई ध्यान है ही नहीं। या यूं कहा जा सकता है कि सरकार को इस बावड़ी की कोई जानकारी है ही नहीं तो ज्यादा उचित होगा। यूं तो पहाड़ों पर ज्यादातर गांवों शहरों कस्बों में पेयजल की कोई ज्यादा किल्लत नहीं है। तमाम सदानीरी नदियों, गाड़ गदेरों, तालाब, झरने, लबालब झीलों के होने के बावजूद कई गांव ऊंचे ऊंचे पहाड़ों पर बसे हैं जहां पानी काफी दूर से ढोकर लाया जाता रहा है। इन्हीं में से एक गांव है उत्तरकाशी जिले के मोरी विकास खंड के फते पर्वत का ष्भीतरी गांवष, जो एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। और बीच गांव में आज भी मौजूद है एक बावड़ी। लोग पहाड़ पर बसने कब और किस शताब्दी में आए होंगे इसकी कोई सटीक जानकारी वा प्रमाणिक इतिहास नहीं है।

उत्तराखंड के पहाड़ों पर लोगों के बसने के बारे में कोई निश्चित तिथि नहीं है। लेकिन सबसे पुराने प्रमाणों में से एक छठी और सातवीं शताब्दी का है। जब लोग यहां बसने लगे थे। कत्यूरी राजवंश भी एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक राजवंश था जिसने एकीकृत उत्तराखंड पर शासन किया। यह दर्शाता है कि हिमालय के इस क्षेत्र में मानव सभ्यता का विकास सदियों से होता रहा है। छठी-सातवीं शताब्दी में कत्यूरी राजवंश के बारे में कहा जाता है कि यह पहला ऐतिहासिक राजवंश था जिसने उत्तराखंड के बड़े हिस्से पर शासन किया और इस क्षेत्र में सभ्यताओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सदियों का विकास और इतिहास से पता चलता है कि उत्तराखंड में मानव सभ्यता का विकास लगातार और सदियों से होता रहा है, न कि किसी एक विशिष्ट समय में। यानी हम लोग ये मानकर चलें कि भीतरी गांव की बसावट भी सातवीं आठवीं शताब्दी की ही होगी और उसी समय इस गांव में पीने के पानी के लिए बावड़ी का निर्माण किया गया होगा। यानी आज से लगभग 2000 से लेकर 1800 साल पहले इस बावड़ी का निर्माण हुआ होगा।

इधर उत्तराखण्ड में पानी की बावड़ियां कई स्थानों पर स्थित हैं। जिनमें देहरादून जिले के विकासनगर में स्थित गंगभेवा बावड़ी प्रमुख है। इसके अतिरिक्त, बागेश्वर जिले के गडसर गांव में भी एक प्राचीन नौला (जो बावड़ी का ही एक रूप है) स्थित है। गंगभेवा बावड़ी भी देहरादून के विकासनगर में है जो गौतम ऋषि की तपोस्थली के रूप में प्रसिद्ध है। यह धार्मिक महत्व के साथ-साथ गर्मी में राहत देने वाली जगह भी है। बद्रीनाथ का नौला भी उत्तराखंड के सबसे पुराने नौलों में से एक है।। माना जाता है कि यह नौला बागेश्वर जिले के गडसर गांव में स्थित है और कत्यूरी वंश के राजाओं द्वारा 7वीं शताब्दी में बनवाया गया था।

ग्रीन टी पीते वक्त गलती से भी न करें ये गलती

अपनी किसी पुरानी फेवरिट ड्रेस में वापस से फिट होना हो या दोस्त या रिश्तेदार की शादी में फ्लैट टमी को फ्लॉन्ट करना हो...इन सबके लिए हम सबसे पहले अपनी डायट में ग्रीन टी को शामिल करते हैं। यही वजह है कि ग्रीन टी, दुनियाभर में मैजिकल चाय के रूप में मशहूर हो गई है। बहुत सी स्टडीज में ग्रीन टी के फायदों के बारे में भी बताया गया है। लेकिन ग्रीन टी पीते वक्त आपको कुछ जरूरी बातों का ध्यान रखना चाहिए और साथ ही एक दिन में 2-3 कप से ज्यादा ग्रीन टी भी नहीं पीनी चाहिए...

खाने के तुरंत बाद न पिएं

ज्यादातर लोगों को सबसे बड़ी गलतफहमी ये होती है कि खाने के तुरंत बाद ग्रीन टी पीने से खाने से शरीर को मिली कैलरीज जादुई तरीके से गायब हो जाएगी। लेकिन इस बात में कोई सच्चाई नहीं है और यह बात पूरी तरह से गलत है। खाना खाने के बाद भोजन में मौजूद प्रोटीन को पचने में वक्त लगता है। ऐसे में अगर आप खाने के तुरंत बाद ग्रीन टी पी लेते हैं तो पाचन की इस प्रक्रिया में रुकावट आती है जिससे डाइजेशन से जुड़ी समस्याएं हो सकती हैं। लिहाजा खाने के तुरंत बाद ग्रीन टी पीने से बचें।

ध्यान रहे ग्रीन टी बहुत ज्यादा गर्म न हो

बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिन्हें बेहद गर्म चाय पसंद होती है। कप में छानी और बस मुंह तक पहुंच गई। लेकिन ग्रीन टी के मामले में ऐसा बिलकुल नहीं करना चाहिए। बहुत ज्यादा गर्म ग्रीन टी पीने से न सिर्फ उशका स्वाद बिगड़ जाता है बल्कि इससे आपके गले और पेट को भी तकलीफ पहुंच सकती है। ग्रीन टी पीने का ज्यादा से ज्यादा लाभ मिले इसके लिए जरूरी है कि आप इसे गुनगुना ही पिएं।

ग्रीन टी उबालते वक्त उसमें शहद न डालें

बहुत से लोग ग्रीन टी को और ज्यादा हेल्दी बनाने के लिए उसमें शहद डालकर पीना पसंद करते हैं। लेकिन जिस तरह बहुत ज्यादा गर्म ग्रीन टी पीना नुकसादेह हो सकता है, ठीक उसी तरह ग्रीन टी को उबालते वक्त अगर आप उसमें शहद डाल देते हैं तो इससे शहद की न्यूट्रिशनल वैल्यू खत्म हो जाती है। ऐसे में जब ग्रीन टी का टेंपरेचर थोड़ा कम हो जाए तब उसमें शहद और दालचीनी मिलाकर पिएं।

दवाइयों के साथ ग्रीन टी न पिएं

बहुत से लोगों को आपने देखा होगा कि जो सुबह की दवाइयों को पानी की बजाए ग्रीन टी के साथ ले लेते हैं। ऐसा बिलकुल न करें ।

साइटिकाः जानिए पीठ की समस्या के कारण, लक्षण और बचाव

साइटिका शरीर में मौजूद सबसे बड़ी नस साइटिका में होने वाली परेशानी है। साइटिका नस कमर के निचले हिस्से से शुरू होकर कूल्हों से होती हुई एड़ियों तक जाती है। यही कारण है कि इसमें आने वाली समस्या आपके कमर के नीचे के पूरे भाग को प्रभावित करती है। आइए आज हम आपको इस समस्या के कारण, लक्षण और इलाज के बारे में बताते हैं ताकि समय रहते इससे बचा जा सके।

साइटिका के कारण

साइटिका का मुख्य कारण साइटिका नस पर चोट लगना या इस पर दबाव पड़ना हो सकता है। इसके अतिरिक्त, रीढ़ के हड्डी में असंतुलन, स्पाइनल स्टेनोसिस की समस्या, पिरिफोर्मिस सिंड्रोम और पेल्विक की चोट भी इसके कारण हो सकते हैं। ट्यूमर भी इस समस्या को पैदा करने का कारण बन सकता है। आमतौर पर 30 से 50 साल की आयु के बीच इस समस्या के होने की संभावना बढ़ जाती है।

साइटिका से जुड़े लक्षण

पीठ के निचले हिस्से में दर्द और झनझनाहट महसूस होना साइटिका की समस्या के मुख्य लक्षण हैं। मांसपेशियों में कमजोरी महसूस होना, पैरों में सुन्नपन का अहसास, उठने-बैठने में काफी परेशानी होना भी साइटिका के लक्षण हैं। किसी एक पैर में तेज दर्द होना या पैरों की उंगलियों में दर्द होना भी साइटिका के लक्षण हैं। अगर आपको ये लक्षण दिखने लगे तो डॉक्टर से संपर्क करें।

साइटिका का कैसे पता लगाया जा सकता है?

अगर आपको खुद में साइटिका की समस्या के लक्षण दिखने लगें तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें ताकि समय रहते समस्या के जोखिमों को कम किया जा सके। इसके लिए डॉक्टर आपको सीटी स्कैन और एमआरआई स्कैन कराने की सलाह दे सकते हैं। इसके अलावा साइटिका का पता लगाने के लिए डिस्कोग्राम टेस्ट या माइलोग्राम टेस्ट को भी बेहतर माना जाता है। इससे पीठ की स्थिति का पता लगाना आसान होता है।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

विटामिन- ए की कमी को दूर करने के लिए खाएं पपीता, चकोतरा

अगर शरीर में पर्याप्त मात्रा में विटामिन- ए मौजूद हो तो यह फेफड़ों को कई तरह की समस्याओं से बचाए रखने में मदद कर सकता है। इसके अतिरिक्त, यह अग्नाश्य और आंतों को स्वस्थ रखने में भी सहायक है। आमतौर पर लोग विटामिन- ए की कमी को दूर करने के लिए सप्लीमेंट्स का सहारा लेते हैं, लेकिन आप चाहें तो कुछ फलों के सेवन से भी इसकी कमी दूर कर सकते हैं। आइए ऐसे ही कुछ फलों के बारे में जानते हैं।

पपीता : स्वाद में मीठा और रसीला पपीता एक बारहमासी फल है यानी आपको हर मौसम में यह आसानी से बाजार में मिल सकता है और इस फल में भरपूर मात्रा में विटामिन- ए पाया जाता है। बता दें कि 100 ग्राम पपीता में करीब 1000 आइयू विटामिन- ए पाया जाता है। ऐसे में विटामिन- ए की पूर्ति के लिए इस स्वास्थ्यवर्धक फल को एक अच्छे विकल्प के तौर पर डाइट में शामिल किया जा सकता है।

चकोतरा : चकोतरा संतरे की तरह दिखने वाला फल है, जिसका अंदरूनी भाग गुलाबी रंग का होता है। यह फल विटामिन- सी और फोलेट के साथ-साथ विटामिन- ए का अच्छा स्त्रोत है, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूती देने से लेकर आंतों को स्वस्थ रखने में मदद कर सकते हैं। इसलिए चकोतरा को डाइट में शामिल करना फायदेमंद साबित हो सकता है। बता दें कि एक मध्यम आकार का चकोतरा खाने से लगभग 143 एमसीजी विटामिन- ए मिल सकता है।

गोजी बेरीज : गोजी बेरीज विटामिन- ए का बेहतरीन स्त्रोत है, इसलिए इसका सेवन फेफड़ों और आंतों में रोग पैदा करने वाले बैक्टीरिया से लड़ने में मदद कर सकता है। इसके अलावा, गोजी बेरीज में ओमेगा-3 और ओमेगा-6 फैटी एसिड भी अच्छी मात्रा में मौजूद होते हैं, जो मस्तिष्क, हृदय और रक्त वाहिकाओं के लिए अच्छे होते हैं। बता दें कि आधी कटोरी गोजी बेरीज में लगभग 26,822 आइयू विटामिन- ए होता है, इसलिए इसे भी डाइट में जरूर शामिल करें।

आड़ू : शरीर से विटामिन- ए की कमी को दूर करने में आड़ू का सेवन भी मदद कर सकता है क्योंकि यह भी विटामिन- ए से समृद्ध होता है। इसके अतिरिक्त, आड़ू में फाइबर के साथ कई तरह के एंटी-ऑक्सीडेंट भी मौजूद होते हैं, जो शरीर में गैस्ट्रिक एंजाइम के उत्पादन को सुविधाजनक बनाकर पाचन क्रिया को बेहतर बनाने का काम करते हैं। इसके साथ ही आड़ू में शामिल एंटी-माइक्रोबियल गुण पाचन संबंधित समस्याओं से भी निजात दिलाने में सहायक साबित हो सकते हैं।

आजकल मार्केट कई तरह के विटामिन- ए सप्लीमेंट्स मौजूद हैं, लेकिन भूल से भी डॉक्टरी सलाह के बिना उनका सेवन न करें क्योंकि गलत एमजी के विटामिन- ए सप्लीमेंट्स स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने का कारण बन सकते हैं।

शब्द सामर्थ्य - (भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. घुमाव-फिराव वाला, आड़ा-तिरछा, जो कठिन हो 3. कुशलता, दक्षता, विशेषज्ञता 6. लोग, प्रजा 7. सीता, जनकनंदनी 9. सुंदर, कामना करने योग्य 10. क्रोधपूर्वक बोलने को उद्यत होना, जोश में आना, क्रोधातिरेक में चेहरे का लाल होना 13. अधीनता, मातहती, वश 14. दबाव, भार, वजन 16. हद, मर्यादा 18. प्रमाण-पत्र, प्रमाणिक कथन या बात 19. पछताना (मुहा.) 21. अनुचित मिश्रण, मिलावट 22. विफल, बेहोश, बौखलाया हुआ।

ऊपर से नीचे

1. सहारा, आश्रय, प्रतिज्ञा, संकल्प 2. परिश्रम 4. रात, रात्रि, निशा 5. पुत्र, बेटा 8. मूल्य, दाम 9. कपड़े का मोटा परदा 11. संदेश भेजना, उच्चारण कराना, कहलवाना 12. मृतकों को जीवित और रोगियों को स्वस्थ कर देने वाला व्यक्ति, प्रेमपात्र की संज्ञा 14. देने की क्रिया, खैरात 5. कुमार्गी, दुराचारी 17. मस्तक, माथा, ललाट 18. प्रश्न, समस्या 20. सहायता, सहारा 21. पशुओं को खिलाने वाली हरी पत्तियां, तृण, तिनका।

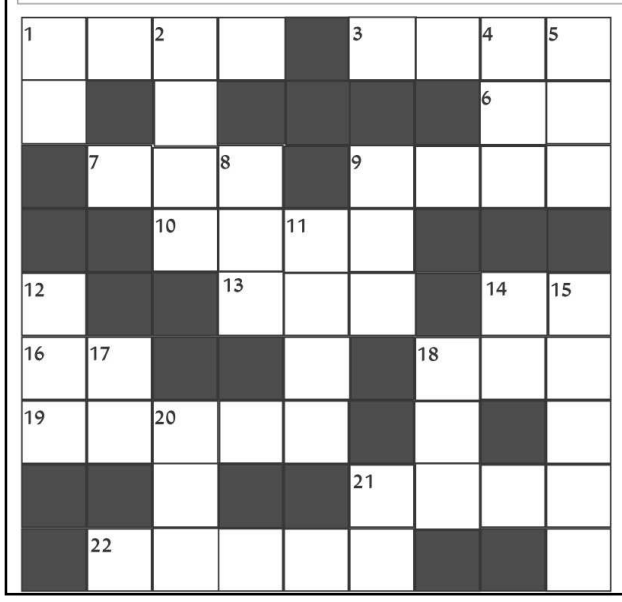

ज	द्दो	जे	ह	द	■	स	पू	त
ल	■	ब	ल	वा	न	■	■	द
म	ह	क	■	खा	म	खां	■	बी
ग्न	■	त	ल	ना	■	स	फ	र
■	म	रा	■	■	■	ना	टा	■
■	हि	■	स	■	■	■	फ	न
■	ला	ज	वा	ब	■	म	ट	र
मां	■	ग	■	सं	त	ति	■	भ
■	मा	त	ह	त	■	■	प	क्षी

कृष्णा श्रॉफ की बमूलिया' डायरी - छोरियाँ चली गाँव से जुड़ी दिल छू लेने वाली यादों की एक झलक

फिटनेस आइकॉन और एंटरप्रेन्योर कृष्णा श्रॉफ, जो हाल ही में अपने नए रियलिटी शो छोरियाँ चली गाँव के ज़रिए बमुलिया की एक जीवन बदल देने वाली यात्रा के बाद मुंबई लौटीं है। लौटने के बाद उन्होंने अपने शो के समय की सबसे प्यारी और यादगार झलकियों का एक खूबसूरत कैरोसेल साझा करते हुए पुरानी यादों की गलियों में एक भावनात्मक सफ़र किया। शो की फर्स्ट रनर-अप रहीं कृष्णा अपनी बमुलिया गाँव में अपने परिवर्तनकारी सफ़र की तस्वीरें पोस्ट कीं और कैप्शन दिया, एक समय की बात है सबमुलिया गाँव में।

कृष्णा द्वारा साझा की गई तस्वीरों में उनके बमूलिया गाँव के अनुभव के कई अनमोल पल झलकते हैं – एक नन्हे बकरी के बच्चे को प्यार से गोद में लेने से लेकर सह-प्रतियोगियों से दोस्ती निभाने तक, ट्रैक्टर चलाने और ग्रामीण कामों में हाथ बँटाने से लेकर गाँववालों के साथ दिल से जुड़ने तक। हर तस्वीर उनके विकास, दोस्ती और उस सादगी की कहानी कहती है जिसने शो में उनके सफ़र को खास बनाया। कृष्णा की इन तस्वीरों में जो सबसे ज़्यादा नज़र आया, वह था उनके चेहरे पर झलकता सच्चा सुख और संतोष। कैरोसेल में उनके साथी प्रतिभागियों के साथ बिताए आत्मीय पल भी थे, जिनमें गर्मजोशी से गले मिलना और हँसी-मज़ाक करना शामिल था, सहज मुस्कानें - सब कुछ बखूबी दिखाई देता है। साथ ही गाँव की गतिविधियों में डूबी उनकी कुछ तस्वीरें भी थीं। कुछ तस्वीरों में वे सजाई गई इलेक्ट्रिक चेयर पर बैठी दिखती हैं (जो शायद किसी शॉकिंग टास्क का हिस्सा रही हो!), तो कुछ में वे ग्रामीणों से पारंपरिक कला-कौशल सीखती नजर आती हैं। हर तस्वीर से साफ़ झलकता है कि कृष्णा की अपने कम्फर्ट ज़ोन से बाहर निकलने की इच्छा हर तस्वीर में साफ़ दिखाई दे रही थी।

कुछ शांत पल भी कैद हुए हैं, जैसे दोस्तों के साथ सूर्यास्त देखना, बमूलिया की मिट्टी की खुशबू में खोए हुए और उस सादगी से जुड़ते हुए दिखाती हैं, जो किसी प्रतिस्पर्धा से कहीं आगे की चीज़ थी। उनकी पोस्ट में झलकता है वह सच्चा अपनापन और पुरानी यादों की मिठास, जिसने इस अनुभव को महज़ एक रियलिटी शो से कहीं ज़्यादा बना दिया।

यह कैरोसेल इस बात की याद दिलाता है कि कृष्णा ने छोरियाँ चली गाँव में बिताए समय को कितना प्यार किया। जिसमें उन्होंने न केवल यादगार पलों को दिखाया है, बल्कि सार्थक पलों को भी दर्शाया है – गाँव के खेती के अनुभवों से लेकर, जो उन्हें उनके पिता जैकी श्रॉफ के कृषि प्रेम से जोड़ते हैं, और गैजेट्स और स्मार्टफोन के बिना जीवन की सादगी में मिलने वाली खुशी।

उनके कमेंट सेक्शन में प्रशंसकों का प्यार उमड़ पड़ा, जिन्होंने पूरे शो के दौरान उनकी प्रामाणिकता की सराहना की, और कई लोगों ने बताया कि कैसे उनके सफर ने उन्हें जीवन के सरल सुखों को महत्व देने के लिए प्रेरित किया। अपनी भावनात्मक ट्रिब्यूट के साथ कृष्णा ने इस अध्याय को अलविदा कहा, जिससे यह स्पष्ट है कि बामुलिया उनके लिए सिर्फ़ एक जगह नहीं था। यह एक ऐसा सफ़र था जिसने उनके दिल पर अमिट छाप छोड़ी।

अली अब्बास जफर की अगली फिल्म में दिखेगी अहान पांडे और शरवरी वाघ की जोड़ी

सैयारा' फेम अहान पांडे और शरवरी वाघ की जोड़ी बड़े पर्दे पर पहली बार साथ दिखाई देगी। यह जोड़ी अली अब्बास जफर की नई फिल्म में साथ दिखाई देने वाली है, इस बात की पुष्टि हो गई है। फिलहाल फिल्म का नाम फाइनल नहीं हुआ है, लेकिन पता चला है कि फिल्म की लीड एक्ट्रेस शरवरी वाघ ने इसके अनुबंध पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। फिल्म से जुड़े एक करीबी सूत्र ने इस खबर की पुष्टि करते हुए आईएएनएस से कहा, सैयारा ने बॉक्स ऑफिस पर इतिहास रच दिया है और अहान पांडे आज हमारे देश के सबसे बड़े जेन जी अभिनेता हैं। शरवरी १०० करोड़ रुपये की ब्लॉकबस्टर फिल्म मुंज्या का भी हिस्सा थीं। आपके पास दो शानदार कलाकार हैं जिन्होंने साबित कर दिया है कि सिर्फ उम्दा अभिनय ही लोगों को सिनेमाघरों तक खींच सकता है।

उन्होंने आगे कहा, दशकों बाद आपके पास बॉक्स ऑफिस पर अच्छा परिणाम देने वाले नवोदित और युवा कलाकार हैं। यह अली अब्बास जफर जैसे बड़े फिल्म निर्माताओं को एक ऐसी युवा फिल्म बनाने के लिए उत्साहित करता है, जो रोमांटिक होने के साथ ही एक एक्शन फिल्म भी है।

सूत्र ने आगे कहा कि इन दोनों युवा कलाकारों को डायरेक्ट करने के लिए अली अब्बास जफर भी उत्साहित हैं। फिल्म का नाम अभी तय नहीं किया गया है। इसे आदित्य चोपड़ा प्रोड्यूस कर रहे हैं। मेरे ब्रदर की दुल्हन, गुंडे, सुल्तान और टाइगर जिंदा है के बाद अली जफर और आदित्य चोपड़ा की यह पांचवीं फिल्म है।

एक अन्य शख्स ने बताया कि मेकर्स को सैयारा की सफलता के बाद अहान पांडे पर भरोसा बढ़ा है। उनका मानना है कि अहान के अंदर जेन जी को सिनेमाघरों में लाने की ताकत है, इसलिए वे भी इसे भुनाना चाहते हैं।

कुछ समय पहले ऐसी खबरें आई थीं कि दोनों साथ काम कर सकते हैं, अब यह बात पुख्ता हो गई है।

वैसे पर्दे पर पहली बार शरवरी वाघ और अहान पांडे की जोड़ी साथ दिखाई देगी। इस बारे में जानने के बाद से ही सोशल मीडिया पर लोग इस फिल्म के लिए अभी से ही उत्साहित हैं।

विद्या बालन ने बताया आकर्षण के नियम की वजह से उन्हें मिली थी परिणीता

बॉलीवुड अभिनेत्री विद्या बालन ने सोमवार को बताया कि उन्हें अपनी पहली फिल्म ञ्परिणीताञ् कैसे मिली थी। उन्होंने साथ में यह भी बताया कि फिल्म के निर्देशक प्रदीप सरकार के साथ काम करने का उनका अनुभव कैसा रहा। विद्या ने सोमवार को इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर किया। इसमें वह सीखो ना नैनो की भाषा पिया गाने पर एक्टिंग करती दिखाई दे रही हैं। इस गाने के बारे में बात करते हुए विद्या ने बताया कि जब उन्होंने पहली बार यह गाना सुना, तो उन्हें तुरंत यह पसंद आ गया और वह प्रदीप सरकार जैसे निर्देशक के साथ काम करने के सपने देखने लगी थीं।

विद्या ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर लिखा, मुझे गानों पर लिप सिंक करना बहुत पसंद है और यह गाना मुझे बहुत पसंद है। जब मैंने इसे पहली बार देखा, तो मैं प्रसून जोशी के गीत से उतनी ही प्रभावित हुई जितनी कि इसके फिल्मांकन से। इसी दौरान मेरे मन में इस कुशल कहानीकार प्रदीप सरकार के साथ काम करने की इच्छा भी जागी।

इसमें उन्होंने आगे बताया कि कैसे उन्हें अपनी पहली फिल्म ञ्परिणीताञ् मिली। उन्होंने आगे लिखा, मुझे पता भी नहीं था कि ब्रह्मांड ने अपना जादू चलाना शुरू कर दिया है। कुछ साल बाद मुझे दादा के साथ एक विज्ञापन फिल्म मिली और फिर किस्मत से मुझे उनके तीन म्यूजिक वीडियो में भी काम करने का मौका मिला। सबसे खास बात यह थी कि किस्सों की चादर एल्बम में काम करने का मौका मिला। इतना ही नहीं, आखिरकार दादा ने मुझे परिणीता में लॉन्च किया।

आकर्षण के नियम को श्रेय देते हुए विद्या ने अंत में कहा, मुझे नहीं पता कि इसे ञ्आकर्षण का नियमञ् कहा जा सकता है या नहीं, लेकिन मुझे पता है कि मैं इसके लिए बहुत आभारी हूं, जैसे मैं जीवन में बहुत सी दूसरी चीजों के लिए हूं।

प्रदीप सरकार की फिल्म ञ्परिणीताञ् को कुछ समय पहले ही रिलीज हुए २० साल पूरे हुए। इस मौके पर मूवी को फिर से री-रिलीज किया गया था। यह फिल्म शरत चंद्र चट्टोपाध्याय के 1914 के प्रतिष्ठित बंगाली उपन्यास पर आधारित है। इस फिल्म में विद्या बालन और सैफ अली खान की जोड़ी नजर आई थी।

गुरु रंधावा का नया गाना पैन इंडिया रिलीज

मशहूर पंजाबी सिंगर और रैपर गुरु रंधावा का गाना पैन इंडिया पिछले सोमवार को रिलीज हो गया है। इस बात की जानकारी खुद सिंगर ने एक पोस्ट के जरिए दी। गुरु ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर गाने का एक क्लिप शेयर कर फैंस को इसकी जानकारी दी। उन्होंने कैप्शन में लिखा, पैन इंडिया रिलीज हो गया है और इस बार पहले कहीं ज्यादा धमाल मचाने आया है जैसे कभी नहीं लगा। गाने को सीधा स्ट्रीम करें। हम पूरी इंडस्ट्री में धमाल मचाने आए हैं। आहसी ने बहुत बढ़िया काम किया है। टी-सीरीज के बैनर तले रिलीज हुआ यह गाना गुरु रंधावा की आवाज और गुरजीत गिल के बोल का शानदार मेल है। गाने की कोरियोग्राफी यश कदम ने की है, जिसने इस ट्रैक को और भी आकर्षक बना दिया।

पैन इंडिया का म्यूजिक, लिरिक्स और विजुअल्स का मिश्रण इसे एक परफेक्ट पार्टी एंथम बनाता है, जो न सिर्फ पंजाबी म्यूजिक प्रेमियों, बल्कि पूरे देश के संगीत फैंस को झूमने पर मजबूर कर देगा।

गाने में आहसी नाम की डांसर के सिजलिंग डांस मूव्स और स्टाइलिश अंदाज ने सबका ध्यान खींचा है। उनके शानदार डांस स्टेप्स गाने को एक नए स्तर पर ले गए हैं। दूसरी ओर, गुरु रंधावा अपने चिर-परिचित स्टाइलिश लुक में नजर आए, जो फैंस को खूब भा रहा है।

दिलचस्प बात यह है कि गाने में गुरु के साथ डांसर आहसी की पहचान छिपाई गई है। वहीं, इंस्टाग्राम पर भी उसका नाम बस अहसी है। डांस वीडियो में भी उन्होंने चेहरे पर मास्क पहना हुआ है, जिसने फैंस की उत्सुकता को और बढ़ा दिया है। सोशल मीडिया पर फैंस गाने की तारीफ के साथ-साथ इस डांसर की पहचान जानने के लिए भी बेताब हैं।

पैन इंडिया अपनी धमाकेदार बीट्स और जोशीले वाइब्स के साथ पहले ही फैंस का दिल जीत रहा है।

कहीं दिल्ली पेयजल की प्यासी न हो जाए!

विनीत नारायण

गौरतलब है कि अकबर की राजधानी फतेहपुर सीकरी पानी के अभाव के कारण मात्र 15 सालों में ही उजड़ गई थी।ज़् दिल्ली का संकट केवल एक चेतावनी है। आने वाले वर्षों में संकट और बढ़ेगा। विशेषज्ञों के मुताबिक़, यदि ठोस कदम नहीं उठाए गए तो 2030 तक देश के आधे बड़े शहर जल-विहीन' क्षेत्रों की श्रेणी में आ सकते हैं। इसलिए अब समय है कि सरकार और समाज दोनों मिलकर दीर्घकालिक रणनीति अपनाएँ।

इस वर्ष देश भर में हुई भारी बारिश और जल प्रलय के बावजूद भारत के शहरी क्षेत्रों में जल संकट है। पेयजल संकट आशंका नहीं, बल्कि एक कठोर सच्चाई है। दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बेंगलुरु जैसे महानगर, जो आर्थिक प्रगति और आधुनिक जीवनशैली के प्रतीक हैं, अब जल प्रबंधन की विफलता के गंभीर परिणाम झेल रहे हैं। हाल ही में दिल्ली के वसंत कुंज क्षेत्र में तीन बड़े मॉल और आसपास की सप्लाई के पूरी तरह ठप हो जाने से यह संकट फिर सुर्ख़ियों में आया।

इन प्रतिष्ठानों को बंद करने की नौबत इसलिए आ गई है क्योंकि टैंकरों से इनकी जल आपूर्ति रुक गई, जबकि भूजल दोहन (ग्राउंड वॉटर बोरिंग) पर पहले से ही एनजीटी ने प्रतिबंध लगा रखा है। यह स्थिति केवल अस्थायी तकनीकी समस्या नहीं, बल्कि एक गहरे प्रशासनिक और नैतिक संकट की ओर संकेत करती है। पिछले सात दशकों में खरबों रुपया जल प्रबंधन पर खर्च किए जाने के बावजूद ऐसा है तो आखिर क्यों??

दिल्ली महानगर की जनसंख्या 2 करोड़ से अधिक है। इससे जल आपूर्ति की व्यवस्था लंबे समय से दबाव में है। दिल्ली जल बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार, शहर में प्रतिदिन करीब 1,000 मिलियन गैलन पानी की मांग है, जबकि उपलब्धता मुश्किल से 850 मिलियन गैलन तक पहुँच पाती है। वसंत कुंज जैसे पॉश इलाकों में भी पिछले कुछ वर्षों से पानी की टंकियों और निजी टैंकरों पर निर्भरता बढ़ी है। परंतु इस बार स्थिति पहले से कहीं अधिक भयावह हो गई क्योंकि प्रशासन ने सुरक्षा और ट्रैफिक कारणों से टैंकरों की आवाजाही पर रोक लगा दी। इस निर्णय का सबसे बड़ा असर व्यापारिक केंद्रों जैसे मॉल्स, रेस्तरां और दुकानों पर पड़ा है।

इन मॉल्स में हज़ारों कर्मचारी काम करते हैं और प्रतिदिन लाखों ग्राहक आते हैं; बिना पानी के ऐसी व्यवस्था एक दिन भी नहीं चल सकती। शौचालय, सफाई, भोजनालय, अग्निशमन प्रणाली, सब कुछ जल आपूर्ति पर निर्भर हैं। जब टैंकरों की आपूर्ति रुकी, तो केवल व्यापार ही नहीं, आसपास के आवासीय समाज भी संकट में पड़ गए।

दिल्ली सरकार ने कुछ वर्ष पहले भूजल दोहन पर सख्त प्रतिबंध लगाया था। उद्देश्य यह था कि गिरते जलस्तर को रोका जाए। यह पहल पर्यावरणीय दृष्टि से आवश्यक था, क्योंकि लगातार बढ़ते दोहन ने दिल्ली के अधिकांश क्षेत्रों में भूजल को 300 फीट से भी अधिक नीचे पहुँचा दिया था। लेकिन सवाल यह है कि क्या पहले वैकल्पिक व्यवस्था पर्याप्त रूप से विकसित की गई?

जब सरकार ने ग्राउंड वॉटर बोरिंग को गैरकानूनी घोषित किया, तब उसके समानांतर रूप में मजबूत टैंकर नेटवर्क, पुनर्चक्रण संयंत्र और रेन वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम विकसित करने चाहिए थे। दुर्भाग्यवश, नीतियाँ बनीं पर उनका कार्यान्वयन अधूरा रह गया। परिणामस्वरूप, लोग न तो कानूनी तरीके से पानी निकाल सकते हैं, न सरकारी वितरण पर भरोसा कर सकते हैं। सोचने वाली बात यह है कि यदि जाड़ों में यह हाल है तो गर्मियों में क्या होगा?

दिल्ली ही नहीं, बल्कि पूरे देश में पानी की आपूर्ति से जुड़ा टैंकर कारोबार वर्षों से विवादों में रहा है। कई जगह यह सार्वजनिक सेवा से अधिक निजी व्यवसाय बन चुका है। अधिकारियों और टैंकर ठेकेदारों के बीच मिलीभगत के आरोप नए नहीं हैं। दिल्ली में जल आपूर्ति में आई यह हालिया बाधा भी ऐसे ही भ्रष्टाचार की परतें उजागर करती प्रतीत होती है।

त्योहारों के मौसम में जब पानी की मांग बढ़ जाती है, घरों में सजावट, साफ-सफाई और उत्सव आयोजन अधिक होते हैं। ऐसे समय पर टैंकरों की आवाजाही पर प्रतिबंध या तकनीकी समस्या' का बहाना बना देना संदेह उत्पन्न करता है। कई स्थानीय निवासियों का कहना है कि कुछ जल एजेंसियों ने टैंकरों की उपलब्धता को कृत्रिम रूप से सीमित कर कीमतें बढ़ाने की कोशिश की है। इससे न केवल आम नागरिकों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ा, बल्कि मॉल्स और व्यापारिक प्रतिष्ठानों को बंद करने की स्थिति आ गई। अगर यह सही हैं, तो यह सिर्फ प्रशासनिक लापरवाही नहीं, बल्कि नैतिक दिवालियापन का उदाहरण है। जल जैसी बुनियादी संपदा के साथ ऐसा बर्ताव किसी नागरिक समाज में अक्षम्य अपराध है।

भारत में जल नीति के कई स्तर हैं। केंद्र सरकार, राज्य सरकारें और नगरपालिका निकाय सभी अपने ढंग से मनमानी में काम करते हैष राष्ट्रीय जल नीति (2012) कहती है कि हर नागरिक को पर्याप्त और गुणवत्तापूर्ण पेयजल मिलेगा, पर छोटे शहरों को तो छोड़ें, दिल्ली जैसे शहरों में भी वास्तविकता इसके उलट है। नगरपालिकाएँ रेन वॉटर हार्वेस्टिंग की अनिवार्यता घोषित करती हैं, पर अधिकांश इमारतों में यह प्रणाली केवल कागज़ों पर मौजूद है। जल पुनर्चक्रण संयंत्रों की क्षमता भी इस संकट का सामना करने के लिए अपर्याप्त है। यमुना का प्रदूषण भी दिल्ली की जल आपूर्ति पर सीधा असर डालता है। यदि यमुना से शुद्ध जल नहीं मिलेगा, तो शहर को बाहरी स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ेगा, जिससे राजनीतिक टकराव बनते हैं। हालाँकि नीति-निर्माण और कार्यान्वयन की बड़ी जिम्मेदारी सरकार पर है, पर नागरिक भी निर्दोष नहीं हैं। शहरी समाज में जल का अनावश्यक उपयोग आम बात है। बागवानी में अत्यधिक पानी, कार धोने में व्यर्थ बहाव, और रिसाव की अनदेखी। स्वच्छ भारत मिशन या हर घर जल जैसे अभियान व्यक्तिगत और सामुदायिक स्तर पर अपनाए जा सकते हैं। मॉल्स और हाउसिंग सोसाइटीज़ में यह व्यवस्था अनिवार्य की जानी चाहिए, ताकि टैंकरों पर निर्भरता घटे।

दिल्ली का वर्तमान संकट केवल एक चेतावनी है। आने वाले वर्षों में संकट और बढ़ेगा। विशेषज्ञों के मुताबिक़, यदि ठोस कदम नहीं उठाए गए तो 2030 तक देश के आधे बड़े शहर जल-विहीन' क्षेत्रों की श्रेणी में आ सकते हैं। इसलिए अब समय है कि सरकार और समाज दोनों मिलकर दीर्घकालिक रणनीति अपनाएँ। गौरतलब है कि अकबर की राजधानी फतेहपुर सीकरी पानी के अभाव के कारण मात्र 15 सालों में ही उजड़ गई थी। महानगरों में वर्षा जल संग्रहण प्रणाली को सख्ती से लागू करना जरूरी है। जल पुनर्चक्रण संयंत्रों की संख्या और क्षमता बढ़ाना भी। टैंकर संचालन को पारदर्शी और जीपीएस-नियंत्रित बनाना आवश्यक है ताकि रिश्वतखोरी पर रोक लगे। यमुना जैसी नदियों की सफाई और उसके पुनर्जीवन को प्राथमिकता देनी चाहिए। पानी की बर्बादी रोकने के लिए सख्त कानून और जनजागरूकता अभियान भी चाहिए। इन कदमों के साथ-साथ यह भी सुनिश्चित करना होगा कि जल प्रबंधन केवल संकट आने पर चर्चा का विषय न बने, बल्कि शहरी नियोजन की मूल नीति का हिस्सा हो। दिल्ली पर आया जल संकट याद दिलाता है कि पानी केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार है। जब हम इसे समझने में चूक करते हैं, तो सभ्यता के अस्तित्व पर भी प्रश्नचिह्न लग जाता है। यदि सरकार और नागरिक समाज अब भी इस संकट को गंभीरता से नहीं लेंगे, तो जल युद्ध' भविष्य का नहीं, वर्तमान का शब्द बनेगा। जलसंकट का समाधान केवल योजनाओं से नहीं, ईमानदार नीयत और सामूहिक प्रयासों से ही संभव है।(ये लेखक के अपने विचार हैं)

	2			6			1	
3			4			2		
							6	
6					4			
	9		5			6		1
4		3			9			2
	8		2				7	
1		2		4		9		6

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

8	7	6	9	5	1	2	3	4
1	3	9	2	8	4	5	6	7
4	5	2	3	7	6	9	1	8
2	8	5	4	6	7	1	9	3
3	1	7	8	9	2	4	5	6
6	9	4	1	3	5	7	8	2
9	4	1	6	2	8	3	7	5
7	2	8	5	1	3	6	4	9
5	6	3	7	4	9	8	2	1

फेस्टिव सीज़न में क्या पहनना है?

त्योहारों का मौसम शुरू होते ही सबकी नज़रें पैन-इंडिया स्टार राशि खन्ना पर टिकी हैं, जिनका बेमिसाल एथनिक वॉर्डरोब स्टाइल इंस्पिरेशन से कम नहीं। हवादार कुर्ता सेट से लेकर शाही साड़ियों और खूबसूरत लहंगों तक, राशि हमें दिखाती हैं कि कैसे पारंपरिक फैशन को ग्रेस, ग्लैमर और मॉडर्न ट्विस्ट के साथ अपनाया जा सकता है। यहाँ हैं उनके कुछ सबसे खूबसूरत फेस्टिव लुक्स, जो आपके अपने फेस्टिव स्टाइल गेम को एक नया आयाम देंगे। गुलाबी रंग में सुंदर वाइब्रेंट कुर्ता चिक राशि ने इस लुक में सादगी और शान का परफेक्ट मेल पेश करती हैं – फ्यूशिया पिंक कुर्ता सेट, जिस पर नाज़ुक कढ़ाई की गई है। ट्रेडिशनल जुत्तियों और स्टेटमेंट इयररिंग्स के साथ यह लुक उतना ही सहज है जितना कि एलीगेंट। परिवारिक समारोहों, पूजा या छोटे फेस्टिव गेट-टुगेदर्स के लिए यह एकदम परफेक्ट चॉइस है।

गोल्डन ग्लो मस्टर्ड मैजिक चमकीला, बोल्ड और खूबसूरत,

राशि का यह मस्टर्ड कुर्ता लुक सादगी और एलिगेंस का एक बेहतरीन उदाहरण है। सफेद धागों की कढ़ाई और पारंपरिक चूड़ियाँ इसमें एक नर्म आकर्षण जोड़ती हैं, जो दिन के उत्सवों या कैज़ुअल फेस्टिव इवेंट्स के लिए एक आदर्श विकल्प बनाता है।

साड़ी ग्लैमर आइवरी एलिगेंस

जो लोग सदाबहार पारंपरिक लुक को पसंद करते हैं, उनके लिए राशि की आइवरी सिल्क साड़ी और कंट्रास्टिंग पिंक ब्लाउज़ एकदम परफेक्ट हैं। गजरे से सजा जूड़ा, स्टेटमेंट ज्वेलरी और मिनिमल मेकअप पुराने ज़माने की खूबसूरती का एहसास देते हैं – फेस्टिव डिनर या सांस्कृतिक समारोहों के लिए यह एक क्लासिक चॉइस है।

रीगल रेडियंस ऑलिव-गोल्ड साड़ी स्टेटमेंट

राशि की तरह बोल्ड और सोफिस्टिकेटेड स्टेटमेंट दें इस डैज़लिंग ऑलिव-गोल्ड साड़ी में, जिसे उन्होंने डीप-कट एम्बेलिश्ड ब्लाउज़ के साथ पेयर किया है। यह लुक पारंपरिक कारीगरी और मॉडर्न स्टाइल का शानदार संगम है – भव्य पारिवारिक आयोजनों या फेस्टिव पार्टियों के लिए एकदम उपयुक्त है।

फेस्टिव ड्रीम ग्रीन और पिंक लहंगा लव

जब फेस्टिव मूड अपने चरम पर हो और आप कुछ नया ट्राय करने का मन हो, तो राशि का यह ग्रीन और पिंक लहंगा तोरानी डिज़ाइनर का सबसे ख़ास त्यौहारी आकर्षण है जो किसी शोस्टॉपर से कम नहीं। बारीक डिटेलिंग, रिच कलर्स और पारंपरिक ज्वेलरी के साथ यह लुक शादियों, रिसेप्शन या दीवाली पार्टीज़ के लिए परफेक्ट है।

आस्था के पर्व छठ पर मुख्य सचिव ने सूर्य को दिया अर्घ्य

संवाददाता

देहरादून। मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन ने भी सपरिवार प्रेमनगर स्थित टोंस नदी के घाट पर पहले अस्ताचलगामी और फिर उदीयमान सूर्य को अर्घ्य दिया।

आज यहां प्रदेशभर में लोक आस्था का पर्व छठ पूजा उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया गया। मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन ने भी सपरिवार प्रेमनगर स्थित टोंस नदी के घाट पर पहले अस्ताचलगामी और फिर उदीयमान सूर्य को अर्घ्य दिया। इस अवसर पर उन्होंने सूर्यदेव एवं छठ माता से प्रदेश की समृद्धि और खुशहाली की कामना की है।

स्मैक तस्कर दबोचा

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। धर्मनगरी में नशा तस्करी कर रहे एक व्यक्ति को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। जिसके पास से 6.35 ग्राम स्मैक बरामद हुई है। जानकारी के अनुसार बीते रोज कोतवाली मंगलौर पुलिस को सूचना मिली कि क्षेत्र में कोई नशा तस्कर नशीले पदार्थ की डिलीवरी हेतू आने वाला है। सूचना पर कार्यवाही करते हुए पुलिस ने क्षेत्र में चैकिंग अभियान चला दिया। इस दौरान पुलिस को एक संदिग्ध व्यक्ति आता हुआ दिखायी दिया। पुलिस ने जब उसे रोककर तलाशी तो उसके पास से 6.35 ग्राम स्मैक बरामद हुई। पूछताछ में उसने

अपना नाम वसीम उर्फ छोटा पुत्र हुसैन अहमद निवासी वार्ड न. 3 बाहरी किला कस्बा लंढौरा थाना कोतवाली मंगलौर बताया। पुलिस ने उसके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की धाराओं में मुकदमा दर्ज क उसे न्यायालय में पेश किया जहां से उसे जेल भेज दिया गया है।

हेरोइन सहित एक गिरफ्तार

हमारे संवाददाता

चंपावत। नशा तस्करी मे लिप्त एक व्यक्ति को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। जिसके पास से 7.28 ग्राम हेरोइन बरामद की गयी है।

जानकारी के अनुसार बीते रोज थान बनबसा पुलिस को सूचना मिली कि क्षेत्र में कोई नशा तस्कर नशीले सामान सहित आने वाला है। सूचना पर कार्यवाही करते हुए पुलिस ने क्षेत्र में चैकिंग अभियान चला दिया। इस दौरान पुलिस को बाइक सवार एक संदिग्ध आता हुआ दिखायी दिया। पुलिस ने जब उसे रूकने का इशारा किया तो वह बाइक मोड़कर भागने लगा। इस पर उसे घेर कर दबोचा गया। तलाशी के दौरान उसके पास से 7.28 ग्राम हेरोइन बरामद हुई। पूछताछ में उसने अपना नाम अमन चंद पुत्र हरीश चंद निवासी भजनपुर वार्ड नंबर 7 थाना बनबसा जिला चम्पावत बताया। पुलिस ने उसके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की धाराओं में मुकदमा दर्ज कर उसे न्यायालय में पेश किया जहां से उसे जेल भेज दिया गया है।

कार की चपेट में आकर युवती घायल

संवाददाता

देहरादून। कार की चपेट में आकर युवती के घायल होने पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार शांति विहार आईएसबीटी निवासी आशा सिंह ने पटेलनगर कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसकी बेटी पैदल घर की तरफ आ रही थी जब वह घर के पास पहुंची तभी पीछे से आ रहे अज्ञात कार चालक ने उसको अपनी चपेट में ले लिया जिससे वह गम्भीर रूप से घायल हो गयी। कार चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

सट्टेबाज दबोचा

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। बीती शाम कोतवाली रूड़की पुलिस को सूचना मिली कि क्षेत्र में एक व्यक्ति सट्टे के कारोबार में लिप्त है। सूचना पर कार्यवाही करते हुए पुलिस ने बताये गये स्थान ग्रीन पार्क कालोनी रूडकी से एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया। जिसके पास से सट्टा कॉपी,पेन व 1020 रूपये की नगदी बरामद हुयी। पूछताछ में उसने अपना नाम अहसान पुत्र अनवर निवासी ग्रीन पार्क कालोनी कोतवाली रूडकी जनपद हरिद्वार बताया। पुलिस ने उसके खिलाफ जुआ अधिनियम की धाराओं में मुकदमा दर्ज कर अग्रिम कार्यवाही शुरू कर दी है।

सीएम ने 6 मोबाइल टॉयलेट वैन को हरी झंड़ी दिखाकर चंपावत रवाना किया

हमारे संवाददाता

खटीमा। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने आज निजी आवास नगला तराई से 6 शौचालयों (मोबाइल टॉयलेट वैन) को फ्लैग ऑफ कर चंपावत रवाना किया गया है।

मुख्यमंत्री की प्रेरणा से रेकिट एवं प्लान इंडिया की ओर से एक कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) द्वारा पहल की गई है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य पूर्णागिरी मेले में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के आगमन के आलोक में स्वच्छता और जन स्वास्थ्य को बढ़ावा देना है। रेकिट संस्था ने जिला प्रशासन चंपावत को सीएसआर के अंतर्गत पूर्णागिरि मेले के लिए मोबाइल टॉयलेट वैन उपलब्ध कराए हैं। इन छह वैनों में चार महिला और चार पुरुष शौचालय के साथ-साथ दो चेंजिंग रूम भी हैं।

इस अवसर पर अध्यक्ष नगर पालिका रमेश चंद्र जोशी, दर्जा मंत्री अनिल कपूर डब्बू, जिलाधिकारी नितिन सिंह भदौरिया, चंपावत मनीष कुमार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मणिकांत मिश्रा, सीडीओ दिवेश शाशनी,एडीएम कस्तूभ मिश्रा आदि मौजूद थे।

धर्म ध्वज की पूजा के साथ प्रभात फेरी का शुभारंभ

संवाददाता

देहरादून। श्री श्याम सुन्दर मन्दिर पटेल नगर से कार्तिक मास की प्रभात फेरी का शुभारंभ वरिष्ठ सदस्य विनोद कपूर एवं प्रदीप मेहता ने धर्म ध्वजा की पूजा अर्चना कर किया।

आज यहां श्री श्याम सुन्दर मन्दिर पटेल नगर से कार्तिक मास की प्रभात फेरी का शुभारंभ वरिष्ठ सदस्य विनोद कपूर एवं प्रदीप मेहता ने धर्म ध्वजा की पूजा अर्चना कर किया। प्रभात फेरी मंदिर की परिक्रमा करते हुए पूर्वी पटेल नगर, राम लीला मैदान, सहारनपुर रोड, गुरु रोड, शिव कालोनी होते हुए मंदिर में पहुंची, जहां मेहता एवं कपूर परिवार ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। भजन गायकों तेजेन्द्र हरजाई, भूपेन्द्र चड्ढा, गौरव कोहली, सुरेंद्र वागला, चंद्र मोहन आनंद, ओम प्रकाश सूरी, दिनेश सूरी, गोपी, प्रीति मेहता ने मना चल वृन्दावन चलिए, प्रभु हम पर कृपा करना, किस रंगिया दुपट्टा मैया तेरा ऐ गुलानारी किस रंगिया आदि मधुर भजन सुनाकर झूमने को आतुर कर दिया। प्रभात फेरी में प्रधान अवतार मुनियाल, महामंत्री गोविंद मोहन, मीडिया प्रभारी भूपेन्द्र चड्ढा, मनोज सूरी, विनोद कपूर, रवि कुकरेजा, गुलशन नंदा, आशु भल्ला, वीरेंद्र कपूर, मिस्टी मेहता, ज्योति कोहली, किरण शर्मा, पिंकी अग्रवाल, सुनीता चितकारा, गीतू बत्रा, मीणा कोहली, रमा तनेजा, साधना कपूर, यशपाल मग्गो, शारदा मग्गो, कमलेश मग्गो, प्रवेश शर्मा, ऊषा, सुदेश आनंद, मिनी जायसवाल, संजय मेहता, पवन मेंहदीरत्ता आदि मौजूद रहे।

राज्य निर्माण के रजत जयन्ती के अवसर पर होंगे विविध कार्यक्रम

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। जिलाधिकारी मयूर दीक्षित की अध्यक्षता में जिला आपदा प्रबन्धन सभागार में 25वे राज्य स्थापना रजत जयंती समारोह कार्यक्रम एवं सरदार बल्लभ भाई पटेल की 150वी जयंती कार्यक्रम की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। समीक्षा बैठक में जिलाधिकारी ने निर्देशित करते हुए कहा कि जनपद में भव्य कार्यक्रम आयोजित किये जाये, विशेष स्वच्छता अभियान 2 से 9 नवम्बर तक संचालित किया जाये जिसमें स्वस्थ्य कैम्प, स्वच्छता के साथ ही सिंगल यूज पॉलीथीन के विरूद्ध कार्यवाही तथा स्ट्रीट लाइटों पर भी दिया जाये।

उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में जन सहभागिता सुनिश्चित की जाये। उन्होंने कहा कि सभी अधिशासी अधिकारी अपने-अपने कार्यालय में हैल्प डेस्क स्थापित कर जनता की समस्याओं का निस्तारण करें। उन्होंने सभी अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि जन समस्याओं तथा कार्यों का व्यक्तिगत रूचि लेते हुए निस्तारित करना सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि इस अवसर पर आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उत्तराखण्ड की कला और संस्कृति का संगम देखने को मिले तथा राष्ट्रभक्ति पर आधारित सांस्कृति कार्यक्रम भी आयोजित किये जाये। उन्होने सभी अधिकारियों को सौंपे गए दायित्वों का सयमबद्धता से निर्वहन करने के निर्देश दिये।

तैश में आकर लहराया शस्त्र, डीएम ने किया शस्त्र जब्त, लाइसेंस निलम्बित

संवाददाता

देहरादून। पटाखा फोडने के विवाद में शस्त्र लहराने पर जिलाधिकारी ने शस्त्र जब्त कर लाईसेंस को निलम्बित कर दिया। जिलाधिकारी सविन बसंल ने कहा कि कानून से खिलवाड जिले में मंजूर नहीं होगा।

मिली जानकारी के अनुसार रायपुर थाना अंतर्गत दीपावली के दिन पटाखा फोड़ने के विवाद पर एटीएस कॉलोनी में शस्त्र लहराने का मामला सामने आया। जिस पर त्वरित संज्ञान लेते हुए जिलाधिकारी सविन बंसल ने शस्त्र जब्त करते हुए लाईसेंस निलम्बित कर दिया है। तथा लाइसेंस निरस्तीकरण की कार्रवाई प्रारंभ कर दी गई है। एटीएस कालोनी में दीपावली के दिन आपसी विवाद में तैस में आकर शस्त्र लहराने का मामला डीएम तक पहुंचा तो डीएम शस्त्र जब्त कराते हुए लाईसेंस निलम्बित कर दिया है। अब लाइसेंस निरस्तीकरण की कार्यवाही तय है।

जिलाधिकारी सविन बंसल ने कहा कि कानून से खिलवाड़ जिले में मंजूर नहीं है ऐसा करने वालो पर कड़ी कार्यवाही की जाएगी। एटीएस कॉलोनी में दीपावली के दिन दो पक्षों में पटाखा जलाने को लेकर विवाद हुआ था। शस्त्र लाईसेंस ध

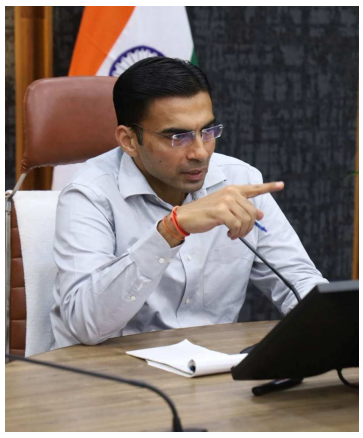

●कानून से खिलवाड़ जिले में मंजूर नहीं: डीएम

ारकों को जिन शर्तों के अधीन लाइसेंस दिया गया था उनका घोर उल्लंघन हुआ है। मामूली विवाद पर शस्त्र लहराने की घटना से भविष्य में शस्त्र दुरुपयोग की है प्रबल संभावना, दोनों पक्षों को डीएम ने तलब किया।

उक्त घटना पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अजय सिंह द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट में उल्लेख किया गया कि थाना प्रभारी रायपुर, देहरादून के माध्यम से उपनिरीक्षक चौकी प्रभारी मयूर विहार थाना रायपुर देहरादून ने अपनी आख्या के द्वारा अवगत कराया है कि 19 अक्टूबर 2025 को थाना रायपुर क्षेत्रान्तर्गत एटीएस कालोनी में दो पक्षों में पटाखा जलाने को लेकर विवाद हो गया था। शान्ति एवं कानून व्यवस्था के दृष्टिगत दोनों पक्षों का धारा 126/135 बीएनएसएस के अन्तर्गत चालान न्यायालय को प्रेषित किया गया है। उक्त घटना के दौरान पुनीत अग्रवाल पुत्र मदन मोहन अग्रवाल निवासी 144 एल एटीएस कालोनी निकट आईटी पार्क जनपद देहरादून द्वारा मामूली विवाद के दौरान अपने लाईसेंसी शस्त्र को प्रदर्शित किया गया।

मामूली विवाद के दौरान इस प्रकार लाईसेंसी शस्त्र को प्रदर्शित करना उक्त शस्त्र लाईसेंस धारक पुनीत अग्रवाल का लापरवाही पूर्ण कृत्य है जिस पर उनका शस्त्र जब्त करते हुए लाईसेंस धारक का शस्त्र लाईसेंस निलिम्बत कर दिया गया है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, अजय सिंह द्वारा प्रकरण की गम्भीरता के दृष्टिगत लाईसेंस धारक पुनीत अग्रवाल पुत्र मदन मोहन अग्रवाल निवासी एटीएस कालोनी का शस्त्र लाईसेंस संख्या-597/थाना रायपुर यूआईएन को निरस्त करने का अनुरोध किया गया, जिस पर जिलाधिकारी ने लाईसेंस निलम्बित करते हुए शस्त्र जब्त करवा दिया है। तथा लाइसेंस निरस्तीकरण की कार्रवाई प्रारंभ कर दी गई है।

ठाकुर अश्वनी सिंह ने बृजभूषण शरण सिंह का किया स्वागत

देहरादून (कासं)। अखंड राजपूताना सेवासंघ के प्रदेश अध्यक्ष ठाकुर अश्वनी सिंह ने आज देहरादून में वरिष्ठ समाजसेवी बृजभूषण शरण सिंह का आत्मीय स्वागत किया। इस अवसर पर राजपूताना बिजनेस ग्रुप के सदस्यों ने भी शिष्टाचार भेंट कर पारंपरिक मूल्यों, एकता और समाजसेवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। बैठक के दौरान संगठन के पदाधिकारियों ने नेतृत्व, संस्कृति और सामूहिक प्रगति के विषयों पर विचार-विमर्श किया। कार्यक्रम में राजपूताना की गौरवशाली विरासत, समाज में नई पीढ़ी की भूमिका और सामाजिक एकता के महत्व पर भी चर्चा हुई। ठाकुर अश्वनी सिंह ने कहा कि राजपूताना सिर्फ एक पहचान नहीं, बल्कि सेवा, साहस और संस्कार की परंपरा है, जिसे नई पीढ़ी को आगे बढ़ाना है।

महिला का पर्स चोरी करने पर ऑटो चालक गिरफ्तार

संवाददाता

देहरादून। महिला का पर्स चोरी करने के मामले में पुलिस ने ऑटो चालक को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से चोरी किया पर्स बरामद कर उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसको न्यायालय में पेश किया जहां से उसको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार घमंडपुर रानीपोखरी निवासी वीरेन्द्र प्रसाद ने रानीपोखरी थाने में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसकी पत्नी ऑटो से घर आयी तो उसने देखा कि उसका पर्स गायब था। जब उन्होंने ऑटो चालक की तलाशी ली तो उसके कब्जे से पर्स बरामद कर लिया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर उसको न्यायालय में पेश किया जहां से उसको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

राष्ट्रपति के प्रस्तावित दौरे की तैयारियों में जुटा हरिद्वार प्रशासन

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। पतंजलि योगपीठ के विश्वविधालय में 2 नवम्बर को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के संभावित दौरे को लेकर जिलाधिकारी मयूर दीक्षित तथा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रमेन्द्र सिंह डोबाल ने प्रशासनिक अमले के साथ आज पहुॅचकर चल रही तैयारियों का स्थलीय निरीक्षण किया। उन्होंने हैलीपेड के पास लगे लाइटिंग पोल्स पर फ्लैग्स लगाने, हैली लैडिंग हेतु सभी सुरक्षात्मक दृष्टि सभी आवश्यक कार्य समय से पूर्ण करने के निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये।

उन्होंने कार्यक्रम के दौरान निर्बाध विद्युत आपूर्ति हेतु सभी व्यवस्थाएं चैक करने तथा बैक-अप प्लान का भी गहनता

❑पतंजलि पहुंचकर डीएम व एसएसपी ने लिया तैयारियों का जायजा

से परीक्षण करने के निर्देश अधिशासी अभियन्ता विद्युत को दिये। उन्होंने सेफ हाउस, वीवीआईपी के रूकने हेतु स्थान, कार्यक्रम स्थल, यात्रा मार्ग, अस्थाई चिकित्सालय, एनआईसी कक्ष सहित विभिन्न स्थलों का गहनता से निरीक्षण किया। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि राष्ट्रपति की सुरक्षा के दृष्टिगत विभिन्न व्यक्तियों का सत्यापन किया जाये। उन्होंने निरीक्षण के दौरान सुरक्षात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये। निरीक्षण के दौरान अपर जिलाधिकारी फिंचाराम चौहान, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट रुड़की दीपक रामचंद्र शेट, एसपी देहात शेखर सुयाल, एसपी क्राइम जितेंद्र मेहरा, एसपी सिटी पंकज गैरोला, ईई यूपीसीएल दीपक सैनी, सीएमओ डॉ.आरके सिंह, रजिस्ट्रार निर्विकार सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू 3 नवंबर को करेंगी विशेष सत्र को संबोधित

हमारे संवाददाता

देहरादून। उत्तराखण्ड विधानसभा का विशेष सत्र तीन व चार नवम्बर को होना है। जिसकी तैयारियां की जा रही है, इस विशेष सत्र में तीन नवम्बर के राष्ट्रपति द्रोपदी मूर्मू सम्बोधित करेगी। जो तीन दिन के लिए उत्तराखण्ड दौरे में रहेंगी।

उत्तराखण्ड में तीन व चार नवम्बर को होने वाले विशेष सत्र के लिए प्रशासन तैयारियों में जुट गया है। इस सत्र के पहले दिन यानि तीन नवम्बर को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू सम्बोधित करेंगी। बताया जा रहा है कि राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू तीन दिन के उत्तराखंड दौरे पर आ रही हैं। दो नवंबर को वह हरिद्वार में एक कार्यक्रम

में शामिल होंगी जबकि तीन नवंबर को देहरादून विधानसभा में विशेष सत्र में राष्ट्रपति का अभिभाषण होगा।

राज्य स्थापना के रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य पर आयोजित होने जा रहे विशेष सत्र में तीन नवंबर को सुबह 11 बजे राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू विशेष सत्र को संबोधित करेंगी।

तीन व चार नवंबर को होने वाले विशेष सत्र के लिए विधानसभा सचिवालय प्रशासन तैयारियों में जुट गया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू तीन दिन के उत्तराखंड दौरे पर हैं।

रजत जयंती के उपलक्ष्य पर विशेष सत्र ऐतिहासिक होगा। इस सत्र में पक्ष-विपक्ष राज्य की राज्य यात्रा के साथ भविष्य के रोडमैप पर चर्चा करेंगे। विधानसभा सचिवालय भी सत्र को यादगार बनाने के लिए तैयारियों में जुटा है। विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खंडूड़ी भूषण ने कहा कि विशेष सत्र की तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। सत्र के पहले दिन राष्ट्रपति का अभिभाषण होगा। इसके अलावा सदन में राज्य के विकास के मुद्दों पर चर्चा होगी।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।